॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥
॥ श्रीमदाचार्यचरणकमलेभ्यो नमः ॥

श्रीपद्मनाभदासजीकृत ४० पद

पद १. राग भैरव.

श्रीलक्ष्मणभटपुत्र पादरज बहुत राजधानी ॥ दरस परस होत सरसावेशित चित्त चित्त ब्रजजन घरघर रचन कला केलि जानी ॥१॥ कनकांगन रंग द्रवत सदन उर ब्रजपुर भावसों मिलि बुद्धि सानी ॥ पद्मनाभ सब बिध संपत्ति दंपती आनंद अदेय दानके दानी॥२॥

पद २ राग देवगान्धार.

श्रीवृन्दावन रम्यक रसदानी ॥ श्रीवल्लभपदकंज माधुरी, तिनकूं जिन अलि यहां रुचि मानी ॥१॥ भ्रूविलास अन्तःपुर गह्वर रासस्थली दृगन दरसानी॥ नन्दसूनु सुख अवाधि यहांलों

मंडल ओर पास रुह पानी ॥२॥ वागधीश यु-वजन रसमूली, मधुराई मुरली मधु जानी ॥ अटपटी बात लपेट बहुत सखी, सुरझावत सब व्रज अरुझानी ॥३॥ अंतरंग बहिरंग प्रसंगित मधुर मधुर बंसी गुन गानी॥ सप्तरंध्र व्हे प्रकट केलि जे प्रचुर करी सखी बहुत सयानी ॥४॥ नखशिखाग्र संकुलित विविध निधि, कृपाग्रंथि सम्यक सुख लानी ॥ सन्मुख भये नेह वरदे-श्वर, पाछें पुलिन ठोरकी ठानी ॥५॥ भूखन भाव वसन पट पहेरे, ललित घटा गहरानी ॥ दशनखचन्द्र किरन रंजित व्हे, पद्मनाभ अ-खियाँ अरुझानी ॥६॥

पद ३ राग गोरी.

शोभा रसमय भाव प्रकट करि श्रीवल्ल-भवरदेहम्॥ नखशिखादि व्रजवधूविरहनी व्या-

पियुगलस्नेहम् ॥१॥ वृन्दारण्यइन्दुसंपुट हृदय-
गूढकन्दरागेहम् ॥ पद्मनाभ सुतहितकृत मार्ग
नेह मुरलिकायेहम् ॥२॥

पद ४ राग टोडी.

हेलि नवनिकुंजलीलारसपूरित, श्रीवल्लभ
तनमन मोरे ॥ अंगअंग विपिन छबी निधान
घनदामिनी द्युति फलफल प्रति दोरे ॥१॥ क-
रत प्रवेश विरहवह्निसुत भूतल बहुत कठोरे ॥
पद्मनाभ मधुरेश विचारत श्रीलक्ष्मनभटसुत
ओरे ॥ २ ॥

पद ५ राग देवगन्धार.

यथा नेहवेहं तथा पुत्रदेहं प्रवेशस्वरूप-
प्रमाणम् ॥ वेणुनाद वृन्दावन तद्रूप गोकुलस्त्री
निरोधप्रबोधित ए सह सूत्रसमानम् ॥१॥ तत्त-
द्भावभूषिता मूर्ति एतावत्कृत अनुसन्धानम्
॥ पद्मनाभ मधुरेशचरणरुहं राग परम सौभा-

ग्य अलंकृत प्रभुदास मधुकर मधुपानं अभय अदेय दीय दानम् ॥२॥

पद ६ राग रामकली.

श्रीमधुरेशो अवधि कृपा व्रज देशे आविर्भावप्रसंगे ॥ शारदनिशाकर वीक्ष्य मधुरवर मन तनु घन अश्रुसलिल रम्यक भरवृष्टि वेणु-सुरंगे ॥१॥ विविध विहार भये गिरिगह्वर प्रसरित रन्ध्रतरंगे ॥ नेहसंलग्न समवेध सखी वधूवृंद आकर्षे समग्रे पद्मनाभ संकुलित सकलत्रिय बंधित पाश अभङ्गे ॥२॥

पद ७ राग भैरव.

देखे मदनमोहन देखियत जितातित करुणामय श्रीवल्लभ मूरति ॥ कहत न बने मग्न स्नेहरंग, आनंदसंपत्ति सब लालसा रासरसकी भ्रुकुटी पूरति ॥ १ ॥ नखसिख प्रतिचित्त देय अवलोकित पैयत निधि वृन्दावन जे दूरति ॥

पद्मनाभ प्रभुचरणकमलयुगल अमलसों गोपीजनवल्लभकी स्फूरति ॥२॥

पद ८ राग सारंग.

हेली रसमय श्रीवल्लभसुत प्रगट भये आज ॥ अंग अंग द्युति तरंग मधुरावली केलि प्रसंग द्रग विलास भौंह भाल कमनीय साज ॥१॥ लीलामृत रसाल प्रेम भक्ति के प्रतिपाल स्मरण करे निहाल भावकी बांधे पाज ॥ पद्मनाभ वागवीशकुंवर केलि कल अखिल अवगाहत प्रेमसिंधु ब्रजजन सिरताज ॥२॥

पद ९ राग टोडी.

बलिबलि मुख सुखरूप परमानंदमय श्री लक्ष्मणनंदनकी छबी न्यारी ॥ नील सजल चपला युत अंग अंग द्युति तरंग नख शिख प्रति उलही रहत भावकी घटारी ॥१॥ दरस परस होत सरसमन प्रचंड सघनवन फेलि रहत

कृपादृष्टि वृष्टिकी उजीयारी ॥ पद्मनाभ प्रभु-रसाल वागधीश वल्लभ मूरती अवनी रवन भवन भाव तारेकी तारी ॥२॥

पद १० राग असावरी.

पान पीकसों रंध्र मूंद गयो क्वणित वेणु वृंदावन अधर छुवायो॥ स्वर सब मूंद गये लिये हाथमें निहारत फूंकसों सुधारत पुनि श्रीदामातें धुवायो ॥१॥ परेरी पराग भुवपर अनुराग मिलि गायो मधुरमोद उपजायो ॥ व्रजजन फुलवारी बेठे जहां विरह मकरंद सब गोकुलन चखायो ॥ जिततिततें सुध लावत सखी सब भई वेसी गति जेसी जा दिन बजायो ॥ पद्मनाभदासप्रभु रसिककुंवर वर लाल गिरिधर-जूको कर प्रसंस समलायो ॥

पद ११ राग असावरी.

श्रीलक्ष्मणलालकी निकाई कहांलो कहूं-

रा माई॥ मधुरावृत मधुर निकुंज मधुररस ताहीतें मुरलीरंध्र व्हे फेलि परा मधुराई ॥ १ ॥ नेह निबिड अरण्य निकर ब्रजजनमन घन गाति प्रति रास घटा सजलाई॥ बसायो मधुर उत्सवपें सरसभाव शरण उपटाई ॥ पद्मनाभ मधुर वचन मिडवारी करी कारि प्रेम प्रणीत अपनाई ॥ २ ॥

पद १२ राग सारंग.

प्रगट भये श्रीविठ्ठलकुमार । आनंद संपत्ति सब व्रजमंझार । हृदय निबिड गहवर विलास वन वाक्नृपतिको अनुभवी मधुप शरीर धरी कछुक करेंगें सौरभ विस्तार ॥१॥ पारिवृढ रत्नरासतरुनीन मध्य वृंदाविपिन विरह सिंगार । छबीकी ललिततरंग अंगअंग संग स्वामिनी कृपा निज धाम अभिराम श्यामघन सूचन करत द्रग श्रोहवार ॥२॥ रसिकनको रसदान करन हित

यशमय उर पेहेरेंहैं हार । अतिप्रवीन त्रिय नखशिख प्रति नित्य केलि संकुलित सकल वपु करत प्रवेश सुत पराग लेनको फूलकमल मध्य मूलवार ॥३॥ घोखलालको नेह निरंतर बीज बयो अवनी अवतार ॥ प्रचुर प्रचंड भयो द्रुम जितातित भाव खंड अविरोधि अखंडित रस-मंडल विठ्ठल पद्मनाभ मधु फलित डार ॥४॥

पद १३ राग सारंग.

याहीतें मुकुटमणि व्रजजनके वागधीश ढोटा प्रसंगे । जबतें निकुंज निधि प्रकट भइ मधुराई सब सौंज लीए, याहीतें विरहवन्हि उ-द्योत किए कुंवर रास तरुणी सदृश इनही संगे ॥१॥ हिलगही हिलग गिरधरकी अंग अंग प्रति तरंगे ॥ पद्मनाभ वेणु नृपति आतमजको स्व-रूप यथार्थ येह जबलों रहे रसभर एक अंगे ॥३॥

पद १४ राग काफी.

श्रीमद्वल्लभ आनंद परमानंद अंग अंग रासे ॥ शरदमासे व्रजवासे दिनदिन प्रति नव हुलासे रवन वृंदावन विहारके हेत भूविलासे ॥ सरलकेश अतिसुदेश विरहवेश साजे ॥ तेल फुलेल त्याग कीये अद्भुत छबी छाजे ॥ २ ॥ भ्रकुटी फरकत भावभरसों तिलक चमक भाल ॥ पोंछत पट व्हे रहे पलक नैन लाल ॥ ३ ॥ वदनकांति अनूप भांति सुखसमूह नगरी ॥ हसत लसत प्रतिबिंबत श्याम हास सगरी ॥ ४॥ नख शिख प्रति मधुर खानी तामें मधुर वानी ॥ मुरली मधुर मोहन अधर याहीतें जानी ॥५॥ उदर उदधि गुण अथाह सबे लालसंगी ॥ वक्रिम कटि ग्रीव गुल्फ रहत ज्यों त्रिभंगी ॥६॥ धोती उपरना पीतांबरसों अनुरागे ॥ जानो व्रज पलाश कुसुम रासद्युति लागे

॥७॥ फरहरात विप्रयोग छोरमें झकोरे ॥ अर्ध ओढी अर्ध आगे नेह मांह बोरे ॥ ८ ॥ लीला अखंड अभिनय भुजदंडमांझ सगरे ॥ तनक हलन चलन होत फिरत भेद बगरे॥९॥ नखशिख चरणारविंद निज प्रताप सघनी ॥ पावत पर-माव्धि निधि नेह करज लगनी ॥ १० ॥ मौन साधि काज साधि प्रेम निर्वाह कीनों ॥ गमन करत गोपी गृह जब संन्यास लीनो ॥ सदाई संपत्ति सदा प्रगट गिरधर इन व्हेहें ॥ पद्म-नाभ ओर विचारत भ्रम व्यामोह व्हेहें ॥१२॥

पद १५ राग काफी.

रागरंग रंगी रसको रासरंगरंगी । श्रीलक्ष्मणभट्ट ये लाल रसकी मुरलिका रंध्ररंध्र घरघर मधुरामृतपूरित प्रियाप्रसंग सावेष्टित सुंदर सुताडित धनतरंगी ॥१॥ स्वर वर रस समुद्र प्रगट संपुट कुंज संगी ॥ पद्मनाभप्रभु

रसाल दान देत लेत गोपी नेह द्रव्यसौन्दर्य जुरी भरी रही प्रेम पेंठ तीन्यो लोक त्रिभंगी॥

पद १६ देवगान्धार.

कहां लों कहों आलीरी श्रीलक्ष्मणभट्ट सुतकीजु निकाई॥ नख शिख प्रति आनंदकेलि वेलि फरी निबिड गूढ वक्र भली चरणकुंज द्वार सेवे सुखमय निधि पाई ॥ १ ॥ द्रग विशाल मांझ लाल प्रगट रसावेश कीये केशनका आभा मुकुट डोलन समुदाई ॥ वृंदावन चंद विरह भूषन अंगअंग लसत हंसत वदन रहत सदा रोमरोम व्रजपुरेंदु वयन छबि छाई ॥२॥ युगल रंग विप्रयोग उपरना उपवीत अरु कंजमाल यहां भाव भाई ॥ पद्मनाभ प्रभु उदार श्री वल्लभ अवतार रहस्यावृत विपिनकृत सुनहो गन्धकराज प्रतापलेश मात्र गाई ॥३॥

पद १७ राग काफी.

महारसरंगरूप दानी श्रीवल्लभ मुखविलास ॥ निज प्रसंगकी तरंग अंगअंग लीला ललित गलित स्वेद भ्रुकुटी भंग आवत डगमगी डगन देखे बने पाछे प्रेम विवश प्रभुदास ॥१॥ प्रेम आविर्भाव भूषण रसमय प्रकाश ॥ हलन चलन जमुना तीर नेह गंभीर निवडावलीत अंतर गांस ॥२॥ केलिसागर परमानंद चाहनमें जित तित सखी दृष्टि परत सुखसमूह रास कदम मंदिर रमन राज सुचित्त उर हुलास ॥ पद्मनाभप्रभु विचित्र मनोहरमय मुरली कृतकृत्य व्रजवास ॥३॥

पद १८ राग मारू.

कोउ रसिक नहीं या रसको ॥ वागधीश वचनामृत गहवर पराकाष्ठा प्रेम प्रसंगित व्रजपुरवधू स्वरूप निष्ठा सुनिसुनि काहुन

कसको ॥१॥ वृंदावन आनंद उदधिको पार नही कहुं जसको ॥ श्रीलक्ष्मणसुत चरणकमल परागमधुपूरित पद्मनाभ अली ताको हे चसको ॥ २ ॥

पद १९ राग ईमन.

प्रगट पूर्णानंद वागधीश मधुरमूर्ति स्फुरती व्रजदेश मधुरास उपदेशं ॥ वेणु वृंदावनगेहमध्य उपस्थित नेहवेह प्रवेश आमित संदेशं ॥१॥ दान कृपा विविध वरनिक रंग रूपद्वार महाभागाब्धिभावखंडप्रवेशं । यशोदाउत्संग रासादिलीलामृत तत्पादप्रताप पद्मनाभ शिरसि छाय आवेशं ॥

पद २० राग सारंग.

श्रीमद्वल्लभरूपसुरंगे ॥ नखसिख प्रति भावनके भूषन वृंदावन संपत्ति अंगअंगे ॥१॥ चटक मटक गिरिधरजूकी नांई एनमेन व्रज-

राज उछंगे ॥ पद्मनाभ देखेही बन आवे सुध रही रास रसाल भ्रूभंगे ॥२॥

पद २१ राग केदारो.

श्रीलक्ष्मणसुत नीके गावे ॥ प्रभुदास द-मला बडभागी तिनकुं पुनिपुनि आप सिखावें ॥ प्रेमविवश व्हे श्रीवल्लभप्रभु नेनन सेनन अर्थ जनावें। प्रकट प्रत्यक्ष यशोदानंदन रसिकसभातें सबे वतावे ॥२॥ वृंदावन रम्यक अवनि रस उरसंपुटतें कोउ न पावे । पद्मनाभ गिरिधर रसलीला वेणुनादकी बातियां भावे ॥३॥

रासोत्सवपद आरंभ.

पद २२ राग केदारो.

अवनी रमन मधुरमय वृक्ष उदभव प्रचं-डम्॥ भाव शाखा सरल हरित घनतडित सम सु-खद छाया व्रजप्रेमखंडं ॥१॥ पत्र किसलय निबिड युवतिवर वशीकर वपु मोहात्मकमधुरदेहं ।

राग अनुराग भरि निकर शशी मोदकर मं-
जरी मोर निजनेह येहं ॥ ३ ॥ मधुरदानाव्रत
रसद वहु फलितफल स्वाद अधिकार भंडार-
भवनं । चलविचल रहसि वृंदावनं सूचनं प्र-
कट एतादृशं पादपद्मम् । पद्मनाभादि ऋषि
पुष्टिमार्गागमी उपासित चरण सेवित प्रसादं
। मधुरोत्सवात्मक रूपगह्वरारण्य वदति व्रज-
वल्लभी वल्लभनादं ॥४॥

पद २६ राग केदार.

विविध रसरास वृंदावनं तादृशं वल्लभ
उर प्रेमदेश वीक्ष्यम । ताडितघनद्युतिसदृश
द्विजाविव उपस्थित श्यामरूपाकृति अंग नि-
रीक्ष्यम ॥१॥ यशोदाउत्संगलीलादि रसस्वाद
सुखनिकर आनंदगिरिशिखरशोभं । रसलीलै
कद्रुमानिर्मित निविड वर रहस्य गहवरारण्य
गुप्तगोभं ॥२॥ प्रेमपारंगव्रजभक्तव्यापारहितअ-

हर्निश भावदृश विशदगमनं ॥ काश्चिद्गाश्चार-
रस काश्चित् दधिदानरस काश्चित् ब्रजराजरस
केलिभवनं ॥३॥ काश्चित् शैलधरणं काश्चित्
तांडव नृत्यलुब्धलोभं ॥ काश्चित् श्रीअंग आ-
नंदानिधि सदृश नेहद्रव्यादिसहसमावेशं ॥ ४ ॥
काश्चित् भूषन वसन काश्चिद बर्हापीड काश्चि-
द्रम्यक कटाक्षनिरोधं॥काश्चिदभिनय अलकवेप-
मानकिंजल्कं व्यापारयुतप्रबोधं॥५॥ सर्वात्मनि-
वोदि कृपा वेणुमदमत्त एतादृश लक्ष्मणसूनुहृद-
यम्॥पद्मनाभादि ऋषि सप्तरंध्र प्रवेश उदारा-
वेश मृदुद्रवितहृदयम् ॥६॥

पद २४ राग केदारो.

निकुंज वैभव दामोदरदास देखी चाहत
हें मिल्यो सखीयनमें टहल हित ॥ कनक
भूमिपर कदंब सघन विपिन ठोर ठोर लता लूम
लूम रही जगमगात रवन भवन रावटी जित-

तित ॥१॥ निज स्वरूप निकट जमुनाकूल दोउ रत्नखचित छतरीनकी पंक्ति जहां केलि हे अखंड नित ॥ पुलिन नलिन निकर शिखर सोभा कछु कही न जात सारस हंस मोर कीर कोकिल कूजतहें गान करत मधुव्रत ॥२॥ निरख गौर श्याम अंग लुभित चित्त करे प्रसंस लक्ष्मन भट सुत उदार वचन दीयो दमला प्रत ॥ पद्मनाभ कृतकृत्य भये दोरी चरणकमल गहे पुष्टिपक्ष वेन कहे एक जन्म राज यह कीजे मत॥

पद २९ राग मारु.

सरस रमन गिरिधरन अंग अंग रंगमय कहूं कहा लक्ष्मणभट्ट सुतकी निकाई ॥ विरहे समाज साजे भूषण विसद भ्राजे लाजे व्रज जन भाव तादृशता तकतोले रहि छवि छाई द्रगन अरुनाई ॥१॥ ठाडे वंसीवट तट दम-

लादिक ओर पास कुंजस्थली सुयश ध्यान समुदाई ॥ करतो उन्नत करि कबहुक उर धर फिरि मंजु कुंजमांझ प्रेम पाज बांधि रीति रसमय बताई॥२॥निकुंज मोर कुहुक मारत घूमर घूमर घटा आई गरज सुहाई॥ जमुना हिलोर सोर पवन झकोर थोर कोकिला लोल रोर कदंबा दिक द्रुम प्रचंड लता विलुलाई ॥३॥ रंध्ररंध्र वृंद वृंद अलि गण अति प्रेममग्न गावत मलार राग रंग वितान छाई ॥ पद्मनाभ चपला चमक रत्न भवन जटित गिरिधर पियप्यारी बेठे पत्र डोले नील पीत संपत्ति दरसाई॥

पद २६ राग मलार.

रसपूरित श्रीवल्लभ सूरति अंगअंग नख शिखवर, दरसपरस होत प्राप्ति परम पुरुषार्थकी ॥ वेणु रंध्र मारग जीतने रह निबिड नेह मधुरा-

वलि वेष्टित ललित त्रिभंग, समाज सरस सौंदर्य कलाप भ्रमज एतादृश पथिकनि पर छांह परत मनरथ सारथि की ॥१॥ अतिउदार आत्मजप्रद मध्य फेलि व्रज कीरती, ता रथकी ॥ पद्मनाभ प्रभु हे सर्वोपर मधु संगमविलास अनुभव नृप अति अधिक अवधि भई, यहां स्थित प्रवल कटाक्ष कृपा अनुचर सब रासस्त्रीभाव निजवैभवसों सिद्ध करत सुखार्थकी ॥

पद २७ राग गोरी

प्रगट भये घनचंद्रमा श्रीलक्ष्मणभट्ट गेह॥ नवनिकुंज लीला लिये रहसि सुधानिधि नेह ॥१॥ संगमभाव सिंगार हों सोभा वरनी न जाय ॥ गृह गृह प्रति सब सुंदरी सोभा रहत मन अरुझाय ॥ २ ॥ रासविलासक्रीडा करी मुरली मधुरे गान ॥ बर्हापीडनटवरवपुसंगम

साज समान ॥३॥ श्रीवृंदावन भूषण मुख सोभा हे अनूप ॥ दृग विशाल रसरंग भरे निजमें ललित स्वरूप ॥ ४ ॥ सरल केश अतिसोहने श्याम सचिक्कन भाय ॥ झलकन मुकुट आभा लिये पिय मुख सुख दरसाय ॥ ६ ॥ ललित कपोल मुकुर मृदु प्रतिबिंबित आनंद ॥ वह सोभा सुख जानवी सब ब्रज जन मन इंदु ॥६॥ स्नेहार्द्र मंडल गंड बदरीयां सुरंग सुरंग ॥ वह सोभा संध्या समय सब निशि केलि तरंग ॥७॥ हंसन खेलन मृदु बोलन संगम भाव सुहाय ॥ बहुत होत जब सोच यह सोभा उरलाय ॥८॥ वक्र भ्रौंह व्है जात हे कूजत वेणु रसाल ॥ सोइ बिध यहां देखीये नेन रंगीले लाल ॥९॥ वंक चितवनी वेशसों चितवत ब्रजजनकी ओर ॥ सोई सोभा सुखद होत हे भावे लहर झकोर ॥१०॥ वदन देखी चिथकित भये रसि-

क सकल यह भांति ॥ पलक ओट व्हे उर लही जहां व्रजजन उर लांति ॥११॥ यह आनन्द मृदु माधुरी सब व्रज जन सुख देत ॥ रसिक विना को पावही भाव रसारस लेत ॥ १२ ॥ अंग अंग भये रंग हे वसन दामिनी साथ ॥ गुणातीत मधुरेशजु ताहीतें व्रजनाथ ॥१३॥ लटकमटक भुवि फिरनमें रसमय भावप्रकाश ॥ तहां प्रवेश व्है भ्रमरको दामोदर प्रभुदास ॥१४॥ चरण-कमल अनुरागको बहुत होत विस्तार ॥ पद्म-नाभके उर बसो यातें चित होय उदार ॥

पद २८ राग सारंग.

रसिक नागर वक्त्र अनुरक्त या स्वामिनी वदनेंदु रमणरंगे ॥ वदरवरनं तद्भावकरनं व्रजे नासागत मुक्ता दृग भ्रुकुटिभंगे ॥१॥ पिच्छगुच्छावली ग्रथितभावावली निविड अल-

कावली सुधासंगे ॥ प्रणतव्रजवधूप्रार्थना इयमेव आरण्यतरफलमिदमिति प्रसंगे ॥ २ ॥ शोभाशतवृतानिकुंजाछिदलात्मक प्रशस्तविप्र- योगात्मकवर्धकअनंगे ॥ पद्मनाभदासप्रभु वेणुपथ प्रगट करी स्वस्वरूपदर्शक हृदय अं- गरंगे ॥ ३ ॥

पद २९ राग सारंग.

श्रीवल्लभस्वरूप दुर्लभ पैवो ॥ निजभावा- वली अंग अंग रंग रंग त्याग सिंगार सज़ नख सिखलों वाह्याभ्यंतर रसपूरित मूर्ति विविध केलि मधुमय अनुभव धनाढ्य सोई सत्यपंथ उपदेश कीये, करी सदृश अब उलटी सों भई सुलटी जो कहत गुरु गोपी परि यह प्रमाण खिलवार देखी आधिक्य आपुनपो आपु वखानत दुर्लभ रसमंडन यह मारग रसिक-

नकों जैवो ॥१॥ विरह संजोग भोग भेदावली नेह वेह व्हेहे जो बतैवो ॥ वृंदावनविहाररस-सागर मथमथ प्रगट पदारथ किये सोइ निर्वाचक अनुभव अखंड रास परमानंद प्रसर आमितरमिताक्षराकार रस अतिउदार निधान कृपानिधि व्रजजन हृदय सांचें में प्रेमतरंग प्रचुर भये तडिदिव वीजावली वैवो ॥ २ ॥ करत निरोध विहार सकलविध उर लायें मृदु इंदु मधु अलैवो ॥ अकथ कथा कहांलों कहीये ? सखी रहीये मौन साधि, धरीये चित्त बंसी नृपतिचरनपंकज मुख रटत जय जय जय मधुरेश यह कोउ भाव परम पुरुषार्थ साधक ताहीतें सर्वात्मना जाचत पद्मनाभ पदरज वल लैवो ॥ ३ ॥

पद ३० राग सारंग

मधुवन सघन स्वरसपूरित भ्रुकुटीभाव संकु-

लित नेहवर ॥ सहज सुगंध अद्भुत अखंडित निबिडतम उभय विलास रासरसललित लतान कृत गहवर दिनकर दशनप्रभा दुहुं दिसते वागधीश रहिवेकों रह घर ॥ १ ॥ वचन माधुरी प्रफुल्लित हंसन लसन कल सेन मनोहर ॥ इत उत कोउ न अघात सुख सींचत काननको सोइ घन सत रंध्र वंसीपथ प्रगटित शरद इंदु अनुचर आगे करि प्रेम वल लरी लगी एक व्रज पर ॥२॥ एकाकी न जात ताही अंग व्रजरत्ननमें भावानिकर ॥ पद्मनाभ यह निधि अवधि वाकी विना चरण विन अंग विन मग चलवो श्रीवल्लभ पदरज बल तव मिलवो गोपीजन मार्ग पुनि आगे मधुरेश प्रभु कर ॥३॥

पद ३१ राग सारंग.

श्रीवल्लभरूप आनंद गगन अंग अंग नि

कुंजस्थली केलिघटा सजलभाव नेह रही उ-
लहरी ॥ यमुना युगल कूल फूलनसों फूले फूल
रावटी जटित जेति तट मणिबंध रेति ते तीय
विहार विविध रसमय सूचित चित्त पद्मनाभभाव
नेन्ही नेन्ही बूँदन परी ॥१॥ व्रजरज सत्त्वावेश
मार्गाब्जदिनेश तव तो दरस दरस ले उघरी
॥२॥ तामें केउकवार रुमझुम आवत प्रसंग पट
ओट चपला चमक दृग लाल भ्रौंह लाल गरजत
रज साधे गह्वर भीर प्रेमसमीर व्है के ते
रूरी ॥३॥ दामोदरदास आदि याही अनुभाव
कर छांह सीतलाई व्रजभूमिका हरी ॥ श्रील-
क्ष्मणलाल रसमय रसाल लीलाब्धि निकर
जाल संकुलित मधुप्रवाल ॥ पद्मनाभ कहालों
कहे या विप्रयोग अग्नि सुतते उमरे ठिटक
रहे वेणुरंध्र सिन्धु मधु कृपानाव बेठि चली
वधू रास पेली ओर भावभरतें उसरी ॥४॥

पद ३२ राग बिहाग.

वृंदावन विरहवह्नि चरण समीप बिन नाहीन लालप्राप्ति ताको प्रमाण रासमंडलमें पाइयत ॥ रसमय स्वरूप मधुरेशजूको गाइ-यत तातें व्रजगोपी आप गुरु कर ज्ञापित ॥१॥ प्रबल प्रचुरता प्रगट भयो प्रताप श्रीवल्लभ अग्नि मृदु मार्गको स्थापित॥ पद्मनाभ वागधीश लीला प्राकट्य अतिउदार सुखसार जे भंडार कदंबादिक मंदिर रह अकह भेद तारी भाव इनहीकें हाथ सकल ओर कहा कहुं केलि सं-गम सुधापति देखित ॥२॥

पद ३३ राग सोरठ.

सुनो व्रजजन मारगकी बातें। उबट बाट लूटत पंथी सब कहीयत हो ताते ॥ १ ॥ प्रेमपुरी पद पद प्रति वासो नेह निसंक दुहा-

ई ॥ अभय ध्वजा महलनपर राजत भाव गेल द्रुम छाई ॥२॥ मधुरमयी फलफूल लगत तहां ललित लता निबिडाई ॥ पाज दुहुं दिश राजहंसकी केलि कुंज सघनाई ॥ ३ ॥ सारस हंस चकोर मोर खग अनुचर हैं अनुरागी ॥ लगन लालसुं सदनसदनप्रति कल कोकिल रट लागी ॥४॥ रस रसाल वर ठोर ठोर पर सर वचनामृत राजे ॥ उपज मनोहर कमल कुमुदिनी सलिल सकल पर भ्राजें ॥ ५ ॥ वेणुरंध्र मानों मत्त मधुपगन रमन करत हैं हेली ॥ गजगति चलत लगत सब अंगन स्याम लटक तरुवेली ॥ ६ ॥ पेंठ लगत दधि मृदु माखनकी छीकें छीकें सजनी ॥ याही भांति व्योहार लालसों परत न कबहु रजनि ॥७॥ जावन पेंठें दुहावन पेंठ सुखसमूह री माई ॥ पनघट पेंठ होत मिसनिसमें आनंदकी अधिकाई ॥८॥ सिंघपोरकी

पेंठ अटपटी रूपरास दरसाई ॥ सर्वस्व दे दे लेत गोपिका दृग दृग तुला तुलाइ ॥९॥ हिलगपेंठ में सबें बिकानी तब त्रिभंगी वर पायो ॥ ऐसी पेंठ लगत हे केउ या संग प्रेम समायो ॥१०॥ उपज मिलनकी वृंद वदनकी भीर वहुत वह ठोर ॥ बाजत दुंदुभि बरखि रहत सुख कथा कंदरा सोर ॥११॥ प्रथम वसिये श्रीवल्लभपदकंजनगरही माई ॥ जहां पराग पद्मनाभादिक निधि वृंदावन पाई ॥१२॥

पद ३४ राग सारंग.

केसरी धोती पहिरे केसरी उपरना ओढे [illegible] सुर[illegible] [illegible] ठे श्रीलक्ष्मणभट धाम जन्म दिवस जान जान अद्‌भुत रुचि मान मान नखशिखकी सोभा उपर वारों कोटिककाम ॥ सुंदरताई निकाई तेज प्रताप अतुलताई

आसपास युवतिजन करत हैं गुनगान । पद्म-
नाभ प्रभु बिलोक गिरिवरधर वागधीश जे अव-
सर हुते ते महाभाग्यवान ॥

पद ३५ राग विहाग.

मधुर व्रजदेश वस मधुर कीनो ॥ मधुर-
वल्लभनाम मधुर गोकुलगाम मधुर विट्ठल भ-
जन दान दीनो ॥१॥ मधुर गिरिधरन आदि
सप्त तनु वेणुनाद सप्त रंध्रन मधुररूप लीनो॥
मधुर फल फलित अतिललित पद्मनाभ प्रभु
मधुर गावत अली सरस रंगभीनो ॥२॥

पद ३६ राग बिलावल.

श्रीविल्लभ चाहे सोई करे ॥ इनके पद दृढ
करि पकरे महा रससिंधु भरे ॥ १ ॥ नाथके नाथ
अनाथ के बंधु औगुन चित्त न धरे ॥ पद्मना.
भकूं जान आपुनो बूडत कर पकरे ॥२॥

पद ३७ राग बिलावल

श्रीविट्ठलनाथ झलत हे पलना ॥ मात अक्काजू हरखि झुलावत लेले सुरंग खिलोना ॥१॥ चुटकी दे दे हँसत हंसावत निरखि वदन मन फूलना ॥ पद्मनाभ प्रभु देवोद्धारार्थ प्रकट भये श्रीगोकुलके ललना ॥२॥

पद ३८ राग गौरी.

श्रीलक्ष्मण गृह आज बधाई ॥ श्रीवृन्दावन भूखन सुख प्रकटित व्रजलीला संपत्ति सुखदाई ॥१॥ प्रचुर भावज्ञ भूतल रसिकनके मृदु मूरति जिनके हित आई ॥ भाव विभु संपत्ति लीए अंगअंग रंगरंग मेह देह भूखन द्युति घनतडिदिव दरसाई ॥२॥ सहज स्वभाव सकल व्रजकेली घटा गहराई ॥ वरसत मेह प्रेम व्रजवासी दुरिदुरि दरसपरस सदरस प्रभावते पद्मनाभ बलैया जाई ॥३॥

पद ३९ रामकली.

रसना श्रीवल्लभ नाम उच्चार ॥ श्रीविट्ठल गिरधर श्रीगोविंद बालकृष्ण सुखसार ॥ १ ॥ श्रीगोकुलपति रघुपति जदुपति श्रीघनश्याम उदार ॥ श्रीगोकुल यमुना वृंदावन निशदिन करत विहार ॥ २ ॥ पद्मनाभ परिवार सकल फल कल्पवृक्ष सिंगार ॥ लीलामृत रसपान करावत रसिकन वारंवार ॥३॥

पद ४० राग रामकली.

भज मन श्रीगोकुलसुखसार ॥ श्रीवल्लभ श्रीविट्ठल श्रीगिरधर निशदिन करत विहार ॥१॥ यमुना कल्पलताके सन्मुख करगही ढिग बेठारं ॥ ब्रह्मछोकरतर ब्रह्मसबंध दे दीने रस-में डार ॥ २ ॥ श्रीवल्लभकी शरण न आये ते जन भुव के भार ॥ पद्मनाभ प्रभु वागधीशकी ये विधि व्रजकी नारी ॥३॥

पद ४१ राग जेजेवंती.

वागधीश रूपरंग जानतहें ब्रजवधू मुरलिका मग अनुभव करि आई ॥ राग अनुराग स्याम अंगअंग कुंजनमें प्रवेश विद्या भलेई सिखाई ॥१॥ नेह वेह छेह गये मन क्रम वचन लहे येवो तदपि इन घातनमें पाई ॥ भावनके गृह कीये भावनके पेंडे लीये ठोरठोर भावस्थली भाव लपटाई ॥२॥ हावभाव चातुरी विहार ब्रज व्याप रह्यो रसकर ईंदु उरझानि उरझाई ॥ जितातित प्रेमपेंठ नगरनागरवर प्रगट प्रसंग वन वानिक बनाई ॥ ३ ॥ छबिकी ललित तरंग रंध्ररंध्र फेलिपरें तामे स्यामलाल सब वाल अपुनाई ॥ पद्मनाभ मधुनिधि ठाडे उरबांही मधुरेश देत ले ले विधि छिपाई ॥४॥

पद ४२ राग सारंग.

एसी बंसी बाज रही वनघनमें व्यापी

रही ध्वनि महामुनिनकी समाधि लागी ॥ भयो ब्रह्मनाद उठत उग्र आहलाद जहांतहां व्रजघोषरत्नवृंद भये सब त्यागी॥३॥ रासादिक अनेक लीलारसभाव पूरित मूर्ति मुखारबिंद छबि धरे विरह आग्नि जागी ॥ तब वेणुनाद-द्वार अब लक्ष्मणभट्ट सुत कुमार पद्मनाभ दैवोद्धार अर्थ त्यागी ॥२॥

पद ४३ राग जेजेवंती।

माई आज तो राखी बंधावत कुंजनम दोऊ ॥ फूले रसभर दोउ यह छबि लसे जोऊ ॥ १ ॥ पचरंग चूनरी लागी बिचबिच मोति पोऊ ॥ ललितादिक राखी बांधत अति सुख होऊ ॥२॥ दक्षिणा रहसि देत जेसी चाहे सोऊ ॥ युगलचरनकमलरति पद्मनाभ होऊ ॥३

पद ४४ राग सारंग

सरस अवनिभवन आनंदघन कुंज छबि

पुंज सुख सहज शोभा ॥ रसिकवल्लभ परम नवलयश अनुपम रूप किरणामृत बहु भांत गोभा ॥ १ ॥ निजंनिरोध अंग अंग पोढे सुख अपने रंग विविध नव केलि रसरंग रहे लोभा ॥ अपूर्ण हे ।

पद ४५ राग सारंग.

ढाडिन नाचे रंगभरी । ब्रजरानीकी कूख सिरानी सब सुख फलन फरी ॥१॥ गृहगृहतें गोपी जुर आई देखन कौतुक री ॥ होत बधाई मंगल गावत देत दान सगरी ॥२॥ तब यशोमती सुन्दरी पहेराई हरखित मोद भरी ॥ हँस बोली यों कहत महरि सों देखन लाल अरी ॥३॥ तव जसोमती ले लाल दिखायो शोभासिंधु खरी ॥ पद्मनाभ सहचरी छबि निरखत वारत सर्वसरी॥४॥

॥ इतीश्री पद्मनाभदासजीके ४५ पद संपूर्णम ॥